कथा साहित्य और किसान विमर्श

डॉ. बबनराव बोडके | डॉ. वीरनाथ हुमनाबादे

अस्वीकरण

वान्या पब्लिकेशंस, कानपुर द्वारा प्रकाशित लेखों/शोध पत्रों में व्यक्त विचार योगदानकर्ताओं के अपने हैं। वे आवश्यक रूप से संपादक/प्रकाशक के विचारों को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं। संपादक/प्रकाशक इन लेखों/शोध पत्रों की सामग्री/पाठ से उत्पन्न किसी भी दायित्व के लिए किसी भी तरह से जिम्मेदार नहीं हैं।

ISBN 978-93-90052-62-2

मूल्य : आठ सौ रुपये मात्र

पुस्तक	:	**कथा साहित्य और किसान विमर्श**
संपादक	:	प्रो. (डॉ.) बबनराव बोडके, डॉ. वीरनाथ हुमनाबादे
©	:	संपादक
प्रकाशक	:	**वान्या पब्लिकेशंस** 1A/2122 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर – 208 021 Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com info@vanyapublications.com Website : www.vanyapublications.com Mob. : 9450889601, 7309038401
संस्करण	:	**प्रथम, 2024**
मूल्य	:	800/-
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, हनुमन्त विहार, नौबस्ता, कानपुर
आवरण	:	गौरव शुक्ल, कानपुर
मुद्रण	:	सार्थक प्रिंटर्स, नौबस्ता, कानपुर

14. स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य और किसान विमर्श
डॉ. राम दगडू खलंग्रे 82

15. हिंदी उपन्यास साहित्य में किसानों की समस्याएँ
शोधछात्र– शेख अब्दल बारी अब्दुल करीम 88

16. प्रेमचंद : कृषक जीवन कल और आज
डॉ. हनुमंत गोपिनाथ पवार 94

17. प्रेमचंद के कथा साहित्य में कृषक जीवन
प्रा. मजहर एम. कोतवाल 102

18. साहित्य में किसान विमर्श की अवधारणा
डॉ. विजय भास्कर लहाने 106

19. किसान विमर्श : विशेष संदर्भ हत्या कहानी
बी.एस. मानखेडकर 111

20. हिंदी उपन्यासों में किसान
डॉ. शिवाजी वडचकर 114

21. 'ढलती साँझ का सूरज' उपन्यास में अभिव्यक्त किसान त्रासदी
डॉ. संतोष विजय येरावार 119

22. 21 वी सदी के उपन्यासों में किसानी जीवन
डॉ. किरण कुमारी 126

23. गोदान उपन्यास में किसान समस्या
प्रा. देविदास गणेशराव येकणे 133

24. प्रेमचंद और भारतीय किसान
शोधछात्र– विशाखा मधुकर रगडे 138

25. 21वीं सदी के उपन्यासों में किसान विमर्श
डॉ. अरुण नागोराव मुंढे 142

26. किसान विमर्श के परिप्रेक्ष्य में अलग–अलग वैतरणी
डॉ. रामरतन विठ्ठलराव शिंदे 147

27. नागार्जुन के बलचनमा में कृषक जीवन
डॉ. वीरनाथ हुमनाबादे 151

28. हिंदी पत्रकारिता और ग्रामीण किसान विमर्श
शोधार्थी– लाडलेमशाक पी. नदाफ 155

29. हिंदी उपन्यास और भारतीय किसान
डॉ. मा.ना. गायकवाड 162

30. प्रेमचंद के साहित्य में किसान समस्या की प्रासंगिकता
डॉ. अभिमन्यू नरसिंगराव पाटील 168

Late Ramesh Warpudkar ACS College
Sonpeth
Pin-431516
Ta.Sonpeth Dist.Parbhani

20

हिंदी उपन्यासों में किसान

डॉ. शिवाजी वडचकर

हमारा देश भारत एक कृषि प्रधान और गांव का देश है। यहां पर लगभग 65 से 70% आबादी कृषि कार्य पर निर्भर है। इसलिए हमारे देश को 'किसानों का देश'कहना उचित लगता है। क्योंकि किसान को देश की रीड की हड्डी कहा जाता है। जब से इस धरती पर जीवन की उत्पत्ति हुई तब से ही किसान खेती करके अनाज का उत्पादन करते आ रहे हैं।यानी किसान ही सारी दुनिया से सारी दुनिया के लिए भोजन हेतु अनाज फल सब्जियां और चारे का उत्पादन करते आ रहे हैं।इन धरतीपुत्र किसानों को अन्नदाता भी कहा जाता है। यदि किसान खेती नहीं करेंगे तो अनाज का उत्पादन नहीं होगा और जब अनाज का उत्पादन नहीं होगा तो हमारे भोजन की भी व्यवस्था नहीं होगी। बिना भोजन के हमारा जीवन जीवित रहना संभव है।

मानव सभ्यता के विकास में कृषि की अमूल्य भूमिका रही है। मानव का अस्तित्व ही कुर्सी पर टिका है लेकिन आज सारी दुनिया में सबसे ज्यादा दुर्दशा किसने की है। आज भले ही विदेशी पूंजी भारतीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर रही हो परंतु आज भी खुशी ही भारतीय व्यवस्था की रीढ है अंग्रेजों के जमाने से आज तक इस रिढ को तोड़ने की कोशिश की जा रही है।यह रीढ झुकी तो है , पर टूटी नहीं है। इस रीढ का रक्षा कवच है– भारतीय किसान जिनके संबंध में एक उक्ति प्रसिद्ध है "भारतीय किसान रूम में पैदा होता है,उसका सारा जीवन रूण में ही बीतता है। तथा वह रुण में डूबे– डूबे ही इस दुनिया से कुछ कर जाता है।" डॉक्टर लोहिया के भाषण के शब्द " Indians are half horse and half man" यह शब्द भारतीय किसानों के लिए ज्यादा सटीक लगते हैं घोड़े की तरह खाटनेवाले,वालों को अपना साथी बनाने वाले इस किसान को चित्रित करते हुए दिनकर जी ने लिखा है।

"जेठ हो या पूस हमारे कृषकों को आराम नहीं हैं,
झूठ बैल का संग कभी जीवन में ऐसा याम नहीं,
मुख में जीव ,शक्ति भुज में, जीवन में सुख का नाम नहीं,
वजन कहां,सूखी रोटी भी मिलती दोनों शाम नहीं है।"

आधुनिक काल में जब साहित्य में सामान्य जन के प्रति आग्रह बढ़ा तब सर पर अंगोछे की पगड़ी, कमर में कच्छे वाली धोती, नंगा वदन, फटी एड़िया कातर आंखें और होंटो पर हंसी वाले किसानों पर हमारे साहित्यकारों की नजर पड़ी।साहित्य की अन्य विधाओं की तुलना में उपन्यास का क्षेत्र अधिक व्यापक होता है। आचार्य नंददुलारे वाजपेयी के अनुसार " मानव जीवन के विविध चित्रों को चित्रित करने का जितना अवकाश उपन्यासों में मिलता है , उतना अन्य साहित्यिक उपकरणों में नहीं।"[1] कृषक समाज हमारे अन्य समाजों से कई कारणों से स्पष्ट भिन्न होता है। यह समाज किसी देश या कल विशेष का क्यों न हो इसमें अपनी एक विशेषता होती है, जो इसे अन्य इकाइयों से पृथक रखती है।"[2] शायद इसीलिए विश्व के अनेक महान उपन्यासकारों ने कृषक जीवन को ही अपने उपन्यासों का प्रधान विषय बनाया है। रूस में गोगोल से लेकर गोर्की तक सभी महान उपन्यासकारों ने कृषक जीवन को ही अपने उपन्यास का मुख्य आधार बनाया है। न केवल कृषक जीवन के उपन्यासकार थे बल्कि अपने जीवन के अंतिम दिनों में उन्होंने कृषकों के समान जीवन भी अपना लिया था।उनके किसी सरल जीवन उच्च विचार से प्रभावित होकर गांधी जी एवं प्रेमचंद ने उन्हें अपना आदर्श मान लिया था। हिंदी के अनेक कथाकारों ने कृषक जीवन को अभिव्यक्त अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया है किंतु प्रेमचंद पहले कथाकार हैं,जिन्होंने कृषक जीवन का समग्रता से चिंतन चित्रण किया है। कपिल देव सिंह ने तो प्रेमचंद को कृषक जीवन का अपना सच्चा शिल्पी माना है।" वास्तव में भारत में कृषक जीवन का अपना और सच्चा शिल्पी कोई है, तो वह प्रेमचंद हीं है। क्या बांग्ला,गुजराती, किसी भी भारतीय साहित्य में प्रेमचंद के जोड़ का उपन्यासकार पाना असंभव है। 'गोदान' तो कृषक जीवन का नूतन गीता है।

उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने आरंभ से किसानों के प्रति अत्यंत संवेदनशीलता जताई है। प्रेमचंद के उपन्यासों में किसान चेतना का क्रमिक विकास होता रहा है। जिसका उदाहरण हमें 'गोदान' में देखने को मिलता है, 'वरदान' में बिरजन के पत्रों में किसान की दयनीय दशा का उल्लेख मिलता है। 'सेवासदन' की मुख्य समस्या भले ही नई समस्या विशेष कर वेश्या समस्या हैं, परंतु इस उपन्यास में किसान समस्या भी एक समस्या है। 'सेवासदन' में किस प्रकार महंत रामदास अपने चेलों द्वारा अत्यंत निर्दयतापूर्वक चेतु किसान को मरवा डालता है। श्री बांके बिहारी के नाम पर गरीब किसानों से जबरदस्ती बेकार लेता है और लगान तथा चंदा वसूल करता है। उनके द्वारा पुलिस की मुट्ठी गर्म करने के कारण वह भी किसानों की मदद नहीं करती। इस उपन्यास में प्रेमचंद किसान की स्थिति सुधरे, सुख, शांति से रहे परंतु इसके लिए भी वे न तो उन कारणों की खोज करते हैं,नहीं किसी प्रकार के वर्ग संघर्ष का संकेत देते हैं। बल्कि शोषण शक्तियों के हृदय–परिवर्तन पर अधिक आस्था दिखाते हैं।

प्रेमचंद का जन्म गांव में हुआ था। उन्होंने भारतीय किसानों के दुख दर्द को बहुत निकट से देखा था। इसीलिए वह उनके अंदर चेतना चाहते थे। उनके 'प्रेमाश्रम' उपन्यास में किसान जीवन की समस्याएं जहां खुलकर चित्रित हुई है वही शोषण जमीदारों के प्रति कृषकों एवं कृषक–हितोषियों का आक्रोश भी फूटा है, उपन्यास का एक पात्र प्रेम शंकर स्पष्ट शब्दों में कहता है " भूमि उसकी है जो उसको जोते शासक को उसकी उपज में भाग लेने का अधिकार इसलिए है, कि वह देश में शांति और रक्षा की व्यवस्था करता है। जिसके बिना खेती हो ही नहीं सकती किसी तीसरे वर्ग का समाज में कोई स्थान नहीं है।"[4] इस उपन्यास के अन्य पत्र मनोहर, बलराज, कदिर के कथनों द्वारा प्रेमचंद की किसानों में जागृति की सूचना एवं उनकी क्रांति चेतना का संकेत देते नजर आते हैं। मनोहर और उसका पुत्र बलराज दीन दुखियों, किसानों पर होने वाले अन्याय अत्याचार का विरोध करते हैं। खां साहब जब बेदखली का भय दिखाते हैं तब मनोहर कहता है," बेदखली की धमकी दूसरों को दें । हमारे यहां खेतों की मेडों पर कोई आया तो उसके बाल बच्चे उसके नाम को रोएंगे।"[5]

'रंगभूमि' उपन्यास का सूरदास किसान तो नहीं है, किंतु उसके पास कुछ बंजर जमीन है, जिसे वह उद्योगपतियों के हवाले करने से साफ इनकार कर देता है। अपनी जमीन को बचाने के लिए वह सांमती शक्तियों और सत्ताधिशों से भी टकराता है। वह जानता है कि उद्योग लगने से गांव की संस्कृति शांति एवं पवित्रता नष्ट होगी किसान तेजी से मजदूर बनने लगेंगे और गांव का कुछ भी भला नहीं होगा।बल्कि उद्योगपति अधिक से अधिक मुनाफा कमाएंगे इसमें सूरदास हार जाता है पर आने वाले दिनों के लिए बहुत बड़ा संदेश दे जाता है।

'गोदान' तो कृषक जीवन का महाकाव्य माना जाता है। यह किसान जीवन के ट्रेजडी की महागाथा है। इसमें ना तो 'प्रेमाश्रम' के किसानों जैसी क्रांतिकारी चेतना है और नहीं 'कर्मभूमि' के समान कोई आंदोलन। हां इसमें कथा नायक होरी की पत्नी धनिया एवं पुत्र के मुख से शोषण शक्तियों के विरुद्ध का आक्रोश फूटा है। किंतु होरी का चरित्र निहायत दब्बू परंपरावादी एवं भाग्यवादी के रूप में ही उभरा है। धनिया का विचार था,कि" हमने जमींदार के खेत जोत हैं,तो वह अपना लगान ही तो लेगा। उसकी खुशामद क्यों करें उसके तलवे क्यों सहलाएं।"[6] परंतु होरी उससे कहता है," यह इसी मिलते–जुलते रहने का परसाद है, कि अब तक जान बची हुई है, नहीं कहीं पता न लगता कि किधर गए। गांव में इतने आदमी तो है, कि पर बेदखली नहीं आयी, किस पर कुड़की नहीं आयी। जब दूसरे के पांव को सहलाने में ही कुशल है।"[7] प्रेमचंद ने अपने उपन्यास में भारतीय किसान को व्यक्ति चेतना के रूप में प्रस्तुत किया है। होरी और उसके परिवार के माध्यम से प्रेमचंद ने कृषक जीवन की समस्याओं का अत्यंत विस्तार एवं समग्रता से चित्रण किया है। इस उपन्यास में शोषक वर्ग सिर्फ जमीदार एवं

महाजन है ,ऐसी वात नहीं, वल्कि जमीदार का कारिंदा,गांव का पटवारी, दरोगा, धर्म के ठेकेदार, पंच, चौधरी, शहर के मिल मालिक सभी मिलकर गरीव किसानों का खून चूसते नजर आते हैं। होरी अपनी दयनीय दशा को पूर्व जन्म के कर्मों का फल मानता है। परंतु गोवर को भाग्य एवं कर्मफल पर विश्वास नहीं है, फलतः वह हर प्रकार के शोषण का विरोध करता है ,चाहे वह महाजनों का हो, चाहे जमीदार का हो, या धर्म के ठेकेदारों का, या गांव के पंचों का, गांव के महाजन माता दिन का तीव्र भर्त्यसना करते हुआ अपने पिता से कहता है " कैसी चाकरी और किसकी चाकरी? यहां तो कोई किसी का चाकर नहीं सभी वरावर है। अच्छी दिल्लगी है। किसी को 100 उधार दे दिए और उस सूद में जिंदगी भर का काम लेते रहे। मूल्य का क्यों है। यह महाजनी नहीं है ,तो खून चूसना है।।[8]

दरअसल 'गोदान' तक आते–आते प्रेमचंद की विचारधारा अत्यंत विकसित हो गई थी। वह अंग्रेजी सरकार, भारतीय राजवाड़े, जमीदार,अफसर शाहों से चलाए जा रहे शोषण के दुष्चक्र को भली भांति समझ गए थे। उनकी शोषण चक्की में पिसती खेतीहार जनता के दुःख दर्दों को देख समझ कर वह अत्यंत विचलित थे।शायद इसीलिए कहा जाता है कि प्रेमचंद के 'गोदान' में वस्तुस्थिति का यथार्थ चित्रण पाठकों का समाधान करता है।

1936 के आस – पास देश के विभिन्न कोनों में किसान सभाए हुई। किसान जागृति एवं आंदोलन का प्रभाव हिंदी साहित्य पर पड़ा। प्रेमचंद के बाद रागेय राघव ,अमृतलाल नागर, राहुल सांकृत्यायन आदि के उपन्यासों में इन प्रभावों को देखा जा सकता है। रागेय राघव के 'विषाद' तथा 'घरौंदे' में किसानों पर जमींदारों के अत्याचारों का चित्रण किया है। राहुल सांकृत्यायनजी के 'जीने के लिए' में किसानों के शोषण का चित्रण है। अमृतलाल नागर के 'महाकाल' में जमीदारों का अत्याचार और किसानों की स्थिति का चित्रण है। 1947 के वाद भी जमीदार जमीदारी खत्म नहीं हो पाई ना उनमें सुधार हुआ। नागार्जुन, भैरव प्रसाद गुप्त, फणीश्वर नाथ रेणु जैसे अन्य उपन्यासकारों ने किसानों की समस्याओं एवं उनके संघर्षों का खुलकर चित्रण किया है। नागार्जुन ने 'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा', 'बाबा बटेश्वर नाथ' और 'वरुण के बेटे' में किसान मजदूर अपने अधिकारों के लिए किसान सभा के माध्यम से जमीदार एवं तत्कालीन राजनीतिक प्रशासनिक व्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठाई है।

भैरव प्रसाद गुप्त क 'गंगा मैया' ,'सती मैया का चौरा' कृषक क्रांति का उपन्यास है। भैरव प्रसाद गुप्त के बाद फणीश्वर नाथ रेणु का नाम लिया जाता है। रेनू 'मैला आंचल' में आजादी पूर्व के किसानों की स्थिति का चित्रण है। 'परतीपरिकथा' में आजादी के बाद के किसानों का चित्रण है।अन्य उपन्यासकारों में रामद्रेश मिश्रा, राही मासूम रजा, शिवप्रसाद सिंह, मधुकर सिंह, अमित राय ,विवेकी राय आदि नाम उल्लेखनिय है। मधुकर सिंह का 'अर्जुन जिंदा है ',अमित

राय का 'बीज', विवेक की राय का 'लोक ऋण', सच्चिदानंद धूमकेतु का 'माटी की महक', रामदरश मिश्रा का 'जल टूटता हुआ', श्रीलाल शुक्ल का 'राग दरबारी, मन्नू भंडारी का 'महाभोज' आदि उपन्यासों में किसान अपनी समस्याओं दुर्दशाओं एवं संघर्षो के साथ उपस्थित है। समकालीन उपन्यासों में शिव मूर्ति का 'आखिरी छलांग' काशीनाथ सिंह का 'रेहन का रघु ',अलका सवर्गी का 'एक ब्रेक के बाद', ममता कालिया का 'दौड़' श्री प्रकाश मिश्र का 'जहां बस फुलतें हैं' ,मनमोहन पाठक का 'गगन घटा घहरानी,' वीरेंद्र जैन का 'पार', रनेंद्र का 'ग्लोबल गांव के देवता' आदि उल्लेखनीय उपन्यास है।

निष्कर्षः हिंदी उपन्यासों में किसान की उपस्थिति, उनकी समस्याओं एवं उनके संघर्षो से इनकार नहीं किया जा सकता। इस पर तथ्य से भी इनकार नहीं किया जा सकता की किसान जीवन पर अत्यधिक संवेदनशील एवं समग्रता से विचार करने वाले लेखक मुंशी प्रेमचंद रहे है।

संदर्भ

1. नया साहित्य — नये प्रकाशन
2. कपिलदेवसिंह — गोदानःगवेषणा पृ.182
3. वही पृ .191
4. प्रेमाश्रम पृ.141
5. वही पृ.45
6. गोदान —पेपर बैक सं.1980 पृ.7
7. वही पृ.7
8. वही पृ.8

कै. रमेश वरपुडकर महाविद्यालय सोनपेठ जि.परभणी
sayaliswapnilwsa@gmail-com

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी, मुंबई

तथा

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड संलग्न...

श्री छत्रपती शिवाजी बहुउद्देशीय ग्रामीण विकास सेवाभावी शिक्षा संस्था, किनगांव द्वारा संचालित...

महात्मा फुले महाविद्यालय, किनगांव

हिंदी विभाग

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/प्रा/डॉ. शिवाजी अप्पाराव वडचकर

कै. रमेश वरपुडकर महाविद्यालय, सोनपेठ जि. परभणी.

सोमवार तिथि-१८ मार्च, २०२४ को 'हिंदी साहित्य और किसान विमर्श' विषय पर आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में विशेष अतिथि /सत्राध्यक्ष/शोधालेख प्रस्तोता/प्रतिभागी के रूप में उपस्थित रहकर सक्रिय सहयोग प्रदान किया तथा

'हिंदी उपन्यासों में किसान'

इस विषय पर शोधालेख प्रस्तुत किया। एतदर्थ यह प्रमाणपत्र दिया जाता है।

डॉ. शीतला प्रसाद दुबे	डॉ. वीरनाथ हुमनाबादे	डॉ. बबन आर. बोडके
कार्याध्यक्ष	हिंदी विभाग	प्राचार्य तथा हिंदी विभागाध्यक्ष
महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी, मुंबई	महात्मा फुले महाविद्यालय, किनगांव	महात्मा फुले महाविद्यालय, किनगांव